दशमः पाठः



अशोकवनिका

[प्रस्तुत पाठ आदिकवि वाल्मीिककृत रामायण के सुन्दरकाण्ड के पन्द्रहवें सर्ग से संगृहीत है। सीता की खोज में हनुमान लङ्का में प्रविष्ट होते हैं तथा वहीं रावण के प्रसिद्ध उद्यान अशोक-विनका की शोभा का आह्लादक दर्शन करते हैं। यह अशोकविनका दिव्य/अद्वितीय सौरभ, स्वाद, सौन्दर्य एवं विविध वर्णों से युक्त कुसुमों, लताओं वृक्षों आदि से सुभोभित है। इसी का वर्णन प्रस्तुत पाठ में है।]

सर्वनाम, तत्, एतत्-प्रयोगः

सर्वर्तुकुसुमै रम्यै: फलवद्भिश्च पादपै:। पुष्पितानामशोकानां श्रिया सूर्योदयप्रभाम् ।।।।।

> कर्णिकारै: कुसुमितै: किंशुकैश्च सुपुष्पितै:। स देश: प्रभया तेषां प्र<mark>दीप्त</mark> इव सर्वत: ॥२॥

पुंनागाः सप्तपर्णाश्च चम्पकोद्दालकास्तथा। विवृद्धमूला बहवः शोभन्ते स्म सुपुष्पिताः ॥३॥

नन्दनं विबुधोद्यानं चित्रं चैत्ररथं यथा। अतिवृत्तमिवाचिन्त्यं दिव्यं रम्यश्रियावृतम् ॥४॥

सर्वर्तुपुष्पैर्निचितं पा<mark>दपैर्म</mark>धुगन्धिभिः। नानानिनादैरुद्यानं रम्यं मृगगणद्विजैः ॥५॥

> अनेकगन्धप्रवहं पुण्यगन्धं मनोहरम्। शैलेन्द्रमिव गन्धाढ्यं द्वितीयं गन्धमादनम् ॥६॥

अशोकवनिकायां तु तस्यां वानरपुंगवः। स ददर्शाविदूरस्थं चैत्यप्रासादमूर्जितम् ॥७॥



सर्वर्तुकुसुमै: (सर्व+ऋतुकुसुमै:) - सभी ऋतुओं के फूलों से

पादपै: - वृक्षों से

मूर्योदयप्रभाम् (सूर्य+उदयप्रभाम्) - सूर्योदय की छटा

श्रिया - शोभा से

कर्णिकारै: - कनेर के फूलों से

किंशुकै: - टेसू/पलाश के फूलों/पेड़ों से

प्रभया - छटा से

पुंनागा - सफेद कमल/नागकेसर नाम

का वृक्ष।

सप्तपर्णाश्चः (सप्तपर्णाः+च) - और 'सप्तपर्ण' नाम का एक

वृक्ष छितवन

चम्पकोद्दालकाः - चम्पा एवं उद्दालक नामक

(चम्पक+उद्दालकाः) पौधा/फूल

विबुधोद्यानम् (विबुध+उद्यानम्) - देवताओं का उद्यान

चैत्ररथम् - कुबेर के उद्यान का नाम

नन्दनम् – स्वर्ग का उद्यान

नानानिनादै: - अनेक प्रकार की ध्वनियों से

मृगगणद्विजै: - पशुओं एवं चिड़ियों से

पुण्यगन्धम् - पवित्र/शुद्ध गन्ध वाला

शैलेन्द्रम् (शैल+इन्द्रम्) – पहाडों का राजा (हिमालय)

गन्धमादनम् – 'गन्धमादन' नाम का एक पहाड़

अशोकविनकायाम् - अशोक विनका में

वानरपुंगवः - बन्दरों में श्रेष्ठ (हनुमान)

ऊर्जितम् – चकाचौंध से युक्त





1. अधोलिखितानि पदानि उच्चारयत-

सर्वर्तुकुसुमै: सर्वर्तुपुष्पै: कर्णिकारै:

मृगगणद्विजै: फलवद्भिश्च पादपैर्मधुगन्धिभि:

सप्तपर्णाश्च चम्पकोद्दालकाः विबुधोद्यानम्

ददर्शाविदूरस्थम् प्रासादमूर्जितम् किंशुकैश्च

- 2. पाठान्तर्गतान् सर्वान् श्लोकान् सस्वरं गायत।
- 3. श्लोकेषु रिक्तस्थानानि पूरयत-
 - (क) अशोक तु तस्यां वानर प्रासादमूर्जितम्।।
 - (ख) कर्णिकारै: किंशुकैश्च """।

स देश: तेषां प्रदीप्त इव।



4. श्लोकांशान् योजयत-

क

नन्दनं विबुधोद्यानं पुण्यगन्धं मनोहरम्। अनेकगन्धप्रवहं प्रदीप्त इव सर्वत:। स देश: प्रभया तेषां चित्रं चैत्ररथं यथा। पुंनागा: सप्तपर्णाश्च रम्यं मृगगणिद्वजै:।

नानानिनादैरुद्यानं चम्पकोद्दालकास्तथा।

निर्देशानुसारं 'तत्' इति शब्दरूपैः रिक्तस्थानानि पूरयत-

	f	वेभिक्तः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
(क) यथा-	पुँल्लिङ्गे	प्रथमा	स:	•••••	******
		षष्ठी	तस्य	•••••	******
		सप्तमी	*********	******	तेषु
(ख) यथा-	स्त्रीलिङ्गे	षष्ठी	•••••	तयो:	***********
		द्वितीया	ताम्	•••••	**********
		तृतीया	*********	ताभ्याम्	*********
(ग) यथा-	नपुंसकलिङ्गे	प्रथमा	तत्	•••••	तानि
		द्वितीया	•••••	•••••	**********
		चतुर्थी	तस्मै	•••••	*******

ख

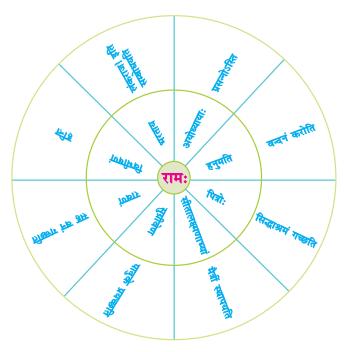
6. प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत-

- (क) पाठेऽस्मिन् देश: इति शब्दस्य कोऽर्थ:?
- (ख) केषाञ्चित् पञ्च पुष्पाणां नामानि लिखत।



- (ग) वानरपुंगवः किं ददर्श?
- (घ) अत्र वानरपुङ्गवः कः?
- (ङ) उद्यानम् कै: निनादै: रम्यम्?

7. चक्रस्थपदानि प्रयुज्य वाक्यानि रचयत-



तृतीयो भागः

यथा-राम: सीतालक्ष्मणाभ्यां सह वनं गच्छति।

- (क) राम:।
- (ख)।
- (제) ············ ।
- (되) ······ l
- (ङ)।
- (च) ······ ।
- (<u>8</u>)

8. मञ्जूषात: पदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

एताम् एषा एते एतानि एषः एताः

यथा- अध्ययने एषः बालः अद्वितीयः अस्ति।

- (क) बाला विद्यालयात् गृहं गच्छति।
- (ख) उद्याने पुष्पाणि विकसितानि सन्ति।
- (ग) पिता लेखनीं मह्मम् आपणात् आनयत्।
- (घ) अहम् फले तुभ्यं ददाामि।
- (ङ) …… बालिका: मधुराणि गीतानि गायन्ति।

योग्यता-विस्तारः

ग्रन्थ परिचय-'रामायण' केवल लौकिक संस्कृत का ही नहीं अपितु विश्व का आदि काव्य है। 'रामायणम् आदिकाव्यं सर्ववेदार्थसम्मतम्।' इसमें सात काण्ड हैं तथा यह चौबीस हजार श्लोकों से युक्त है। 'चतुर्विंश सहस्राणि श्लोकानामुक्तवानृषि:।'

* रामायण का सबसे अच्छा काण्ड सुन्दरकाण्ड माना जाता है। कई प्रदेशों में इस काण्ड के नियमित पाठ की परम्परा है। सुन्दरकाण्ड के विषय में एक लोक प्रचलित कथन प्राप्त होता है, जो इस प्रकार है-

सुन्दरे सुन्दरो रामः सुन्दरे सुन्दरी कथा। सुन्दरे सुन्दरी सीता सुन्दरे किं न सुन्दरम्।

* अशोक-विनका दशानन रावण का उद्यान था जिसमें अपहरण के बाद सीता को छिपा कर रखा गया था।

परियोजना-कार्यम्

भारतवर्ष के कुछ प्रसिद्ध बागों अथवा उद्यानों की सूची बनाएँ, यथा-शालीमार एवं निशात।

